Danshasanam

Folder No.	022013
Granth Name	Danshasanam
Author	Vardhaman Parshwanath Shastri
Publisher	Govindji Ravji Doshi
Edition	1
Year	1941
Pages	380

दानशासनम्

फोल्डर नं.	०२२०१३
ग्रन्थ	दानशासनम्
लेखक	वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री
प्रकाशक	गोविंदजी रावजी दोशी
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९४१
पृष्ठ	३८०

मुख्य टाइटल
विषयानुक्रमणिका
प्रथमोध्याय
- मंगलाचरण ---------- १
- कलिकाल के राजा ---------- ६
- उत्तमदाता ---------- १०
- पापी राजा का द्रव्य उत्तमपुरुष नहीं लेते ---------- १२

द्वितीयोध्याय
- मंगलाचरण व प्रतिज्ञा ---------- १३
- पात्रापात्राविवेकशून्य कर्मसंचय करते है ---------- १३
- सत्पात्रदानका माहात्म्य ---------- १७
- सक्षी पात्र दानीके आश्रयमें आते हैं ---------- २१
- दान के गुणपंचक ---------- २२

तृतीयोध्याय
- दान के भेद ---------- २३
- उद्धार करने योग्य चीजें ---------- २७
- निर्दयतासे होनेवाले फलको उदाहरण के द्वारा दिखाते है ---------- ३१
- जाप देने का फल ---------- ३८
- संतोषपूर्वक पूजा करनी चाहिये ---------- ४१
- अस्थिर चित्तवाले पुण्यसंचय नहीं करते ---------- ४६
- जिनमंदिर में वर्जनीय क्रियाएं ---------- ५१
- शुद्ध्यादिके लिए गंधोदक लगानेका उपदेश ---------- ५५
- धर्मद्रोही के घर में शुभ क्रियायें व लक्ष्मी प्रवेश नहीं करती है ---------- ६०
- प्राण जानेपर भी धर्म को हानि नहीं पहुंचावे ---------- ६४

धनिक रक्खे हुए गरीबों के धनको नहीं लेवे ---------- ७०
पंचमकाल में मुक्ति क्यों नहीं है ---------- ७७
सेवकों पर इर्ष्याभाव न करें ---------- ८७
धनान्ध लोगों का व्यवहार ---------- ९७
सज्जन लोग एसा विचार करे ---------- १०४
उपसंहार ---------- १०५
चतुर्थोध्याय-दानशाला लक्षण
मंगलाचरण व प्रतिज्ञा ---------- १०६
नवीन गृहसंस्कार ---------- १०६
साधुप्रविष्टगृह में भूतादि की पीडा नहीं होती है ---------- १११
उपसंहार ---------- ११६
पञ्चमोध्याय-पात्रसेवाविधि
मंगलाचरण व प्रतिज्ञा ---------- ११७
प्रतिग्रह ---------- १२१
आहार शुद्धि ---------- १२२
पुण्यसंस्कारके लिए प्रयत्न करें ---------- १२४
षष्ठोध्याय-द्रव्यलक्षण
द्रव्यलक्षण ---------- १२६
दुष्टों के संसर्गसे धर्मनाश ---------- १३१
सप्तमोध्याय
प्रतिज्ञा ---------- १३४
दीक्षोद्देश्य ---------- १४१
पहिले सम्यग्दर्शन होता है ---------- १५१
प्राचीन और अर्वाचीन जैनो में अंतर ---------- १५५
परस्त्रीगृहप्रवेशनिषेध ---------- १६
दैवज्ञका सन्मान ---------- १७०
अष्टमोध्याय-दातृलक्षणविधि
दातृलक्षण ---------- १७२
कंजुस दाता ---------- १७७
शक्तिमाह ---------- १८१
दाननिषेध ---------- १८८
साधुओंको दिल खोलकर दान देवे ---------- १९३
पात्रप्रशंसा ---------- १९७
आयव्ययविवेक ---------- २०३
आहारदानमें सर्वदान ---------- २०७
बड़े पुरुषों को गाली नहीं देवे ---------- २१६
त्रिकरणशुद्धइपूर्वक दत्तदान ---------- २२६
याचकोंकी दुर्दशा ---------- २३३
पंक्तिभेदकृतफल ---------- २४३
मिथ्यादृष्टिको दयासे ही दान देवे ---------- २५१
अन्यद्रव्यग्रहणनिषेध ---------- २६०
देव व ऋषिसेवाफल ---------- २६८
उपसंहार ---------- २७४

नवमोध्याय-औषधिदानविधानम्
उत्कृष्टजैन ---------- २७५
प्राग्भक्तादि औषधसेवन फल ---------- २७७
उपसंहार ---------- २८३
दशमोध्याय-शास्त्रदानविधानम्
शास्त्रका महत्त्व ---------- २८४
गुरुभक्तिका फल ---------- २८९
दानहीन संपत्ति व्यर्थ है ---------- २९३
अन्यनिंदाफल ---------- २९७
विद्वानों के अनादरसे होनेवाली दस बातें ---------- ३०१
उपसंहार ---------- ३०४
एकादशोध्याय-भावलक्षण विधानम्
राजा के समान पुण्यपरिकरोंको मिलाना चाहिये ---------- ३०५
कोई कहार के समान होते है ---------- ३११
कोई चूहे के तुल्य विवेकहीन होते है ---------- ३१५
पापकर पुण्य ---------- ३२१
परिग्रहरक्षणतत्पर सदा अस्वस्थ रहता है ---------- ३२६
सज्जन पापकार्य को त्याग दे ---------- ३३१
जिनधर्म के अपवादको दूर करे ---------- ३३६
ग्रंथरचनाकाल ---------- ३४०